# पितृ दोष - ज्योतिषीय दृष्टि से

राज मल्होत्रा

पितृ दोष अथवा पैतृक दोष अथवा पितृ ऋण से अभिप्राय जातक या जातक के पूर्वजों द्वारा किये गए पूर्व जन्म के पाप कर्म से है जिसका फल इस जन्म में प्रारब्ध के रूप में जातक को भोगना है। कहा जाता है कि यह पितृ दोष पीढ़ी दर पीढ़ी चलता ही रहता है जब तक उसका उपाय न कर लिया जाए। इसके पीछे का तर्क यह है जब जातक पैदा होने के पश्चात् अपने माता-पिता एवं पूर्वजों की सम्पत्ति का भोग करता है तो उनके अशुभ फल का भार भी स्वत: जातक और आगामी पीढ़ियों पर आता है। पितृ दोष एक प्रकार से अदृश्य बाधा है जो धन-संपत्ति, समृद्धि, बंधु-बांधवों में प्रेम, संतान इत्यादि सुख की प्राप्ति के लिए अत्यधिक प्रयत्न करवाती है।

**पितृदोष के लक्षण :** वंशानुगत रोग, आर्थिक तंगी, कलहपूर्ण वातावरण, भाई–बंधुओं से अलगाव, अचानक से धन नष्ट होना, चलता हुआ व्यापार अचानक रुक जाना, परिवार में अचानक मृत्यु आरंभ हो जाना, विवाह में देरी होना, संतान प्राप्ति में विलंब, कुंडली शापित होना, पितरों द्वारा बार–बार स्वप्न में आना इत्यादि पितृ दोष के लक्षण हैं।

**पितृ दोष के कारण :** पितृ दोष होने के निम्न मुख्य कारण होते हैं :

- पूर्वजन्म में जातक या उसके पूर्वजों द्वारा किए गए पाप कर्म, जैसे जमीन जायदाद हड़पना, बेईमानी से पैसा कमाया गया धन, गौ हत्या या नाग हत्या आदि।
- पितरों का अपमान, श्राद्ध या तर्पण न होना।
- देवस्थल अथवा तीर्थ स्थल में बुरे कर्म करना।
- गुरु पत्नी अथवा गुरु पुत्री से अनैतिक संबंध रखना।
- नदी अथवा पवित्र जल में मल–मूत्र विसर्जन करना।
- परिवार के स्त्रियों का भ्रष्ट चरित्र होना या भ्रूण हत्या करना।
- कुलदेवता अथवा कुलदेवी की विस्मृति

**पितृदोष के ज्योतिष योग : पितृ दोष के मुख्य ज्योतिषीय योग निम्न होते हैं :**

- द्वितीय भाव में राहु और बृहस्पति की युति क्योंकि यह भाव कुटुंब के साथ–साथ धन स्थान भी है।
- चतुर्थ भाव में राहु, चंद्र या सूर्य और शनि का होना। चतुर्थ भाव का सम्बन्ध जातक के सुख से है।
- चंद्र पर मंगल, राहु, केतु, शनि की पूर्ण दृष्टि।
- सूर्य का नीच राशि में मकर या कुंभ के नवांश में होना।
- दशम भाव में पापी ग्रह का होना अथवा दशम भाव का पाप कर्तरी में होना।
- व्यक्ति का जन्म अश्लेषा, मघा, मूल, ज्येष्ठ, रेवती, अश्विनी जैसे गंडमूल नक्षत्र में होना।
- राहु–सूर्य या सूर्य–केतु की युति 6, 8, 12 भाव में।
- सप्तम भाव में राहु–शनि की युति।
- पंचम भाव में नीच का सूर्य हो, नवांश में पंचम भाव शनि का हो या उनके दोनों तरफ पाप ग्रह स्थित हों।
- पंचमेश सूर्य हो और पंचम एवं नवम भाव अशुभ ग्रह स्थित या दृष्ट हो।
- द्वादशेश की स्थिति लग्न में, अष्टमेश की स्थिति पंचमेश की राशि में और दशमेश की स्थिति अष्टम भाव में हो।
- लग्न अथवा त्रिकोण में सूर्य, शनि व मंगल तथा अष्टम या द्वादश भाव में राहु और गुरु का स्थित होना।
- लग्नेश दुर्बल होकर पंचम भाव में हो और पंचमेश सूर्य के साथ हो।

- षष्ठेश और दशमेश पंचम भाव में राहु से युक्त हों।

**पितृ दोष निवारण के उपाय :**

पितृ दोष के निवारण के कुछ मुख्य उपाय निम्न हैं :

- काले तिल मिलाकर दक्षिण दिशा में मुंह करके पितरों को पानी देने से यह दोष दूर होता है।
- घर का मुखिया और जातक लगातार 7 अमावस्या सफेद मिठाई और फल किसी ब्राह्मण को दें तब भी पितृ दोष दूर होता है।
- चतुर्दशी के दिन पीपल के पेड़ पर शक्कर मिश्रित दूध चढ़ाने से भी पितृ दोष दूर होता है।
- प्रत्येक अमावस्या को वेद पाठी ब्राह्मण को घर में भोजन दक्षिणा देने से भी पितृ दोष दूर होता है।
- गंड मूल नक्षत्र में जन्म होने पर उक्त नक्षत्र का विधिवत् जप, दशांश हवन तथा नक्षत्र के अनुसार ही दक्षिणा प्रदान करनी चाहिए।
- गया तीर्थ में श्राद्ध– तर्पण कराना चाहिए।
- नासिक में स्थित त्र्यंबकेश्वर में नारायण नागबलि विधिवत तरीके से करानी चाहिए।
- हर शनिवार अथवा अमावस्या को पितरों के नाम से दान, पुण्य, तर्पण करना चाहिए।
- श्राद्ध पक्ष में श्रीमद्भागवत महापुराण का पाठ कराना चाहिए।
- पीपल के वृक्ष को नित्य जल अर्पित करना चाहिए रविवार छोड़कर।
- पूर्वजों की पुण्यतिथि पर गरीबों को अन्न तथा वस्त्र इत्यादि का दान करना चाहिए।
- कौवा को हर शनिवार सरसों के तेल में बनी मीठी रोटी डालना चाहिए।
- पितृ दोष निवारण यंत्र स्थापित करके प्रतिदिन धूप दीप दिखाना चाहिए तथा ऊँ पित्राय नमः का 7 बार जप करना चाहिए।
- रविवार को लाल वस्त्र ,लाल मसूर, गेहूं, तांबा अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान करना चाहिए।
- सवा मीटर सफेद कपड़े में सवा रुपया और एक चुटकी चावल बांधकर एक कोने में गांठ लगाकर तथा उस कपड़े में पानी का नारियल रखकर पवित्र स्थान पर रखें।
- श्राद्ध करते समय तिल, जौ, कुश, गंगाजल, गोपी चंदन का प्रयोग करना पितरों को प्रसन्न करता है।
- संतान बाधा हो तो अमावस्या या पूर्णिमा को पितरों की संतुष्टि के लिए कर्म करने चाहिए।
- गऊ सेवा, असहाय, निर्बल की सहायता ।
- कोढ़ियों की सेवा विशेष लाभ देती है।
- परिवार के बुजुर्गों को मान–सम्मान देने से भी पितृदोष की अशुभता कम होती है ।
- जातक को या परिवार के सदस्य को पितृ–सूक्त का पाठ नित्य करना चाहिये।
- पितृ दोष निवारण मंत्र (मार्कंडेय पुराण (94/3 – 13) का नियमित पाठ करने से पितृ प्रसन्न होते हैं।

ऊँ सर्व पितृ देवताभ्यो नमः

ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः

23) पितृ दोष होने पर पीड़ित व्यक्ति अथवा परिवार के किसी सदस्य के द्वारा नित्य 'पितृ सूक्त' का पाठ करना चाहिये 'पितृ–सूक्त' के पाठ से उसके पितर सदैव प्रसन्न रहते हैं। यदि संस्कृत में पाठ कठिन लगे तो हिंदी भावार्थ का पाठ करें।

**।। पितृ स्तोत्र पाठ ।।**

अर्चितानाममूर्तानां पितृणां दीप्ततेजसाम्।

नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां दिव्यचक्षुषाम्।।

इन्द्रादीनां च नेतारो दक्षमारीचयोस्तथा।

सप्तर्षीणां तथान्येषां तान् नमस्यामि कामदान्।।

मन्वादीनां च नेतारः सूर्याचन्दमसोस्तथा।

तान् नमस्यामहं सर्वान् पितृनप्सूदधावपि।।

नक्षत्राणां ग्रहाणां च वाय्वग्न्योर्नभसस्तथा।

द्यावापृथिवोव्योश्च तथा नमस्यामि कृतांजलिः।।

देवर्षीणां जनितृंश्च सर्वलोकनमस्कृतान।

अक्षय्यस्य सदा दातृन् नमस्येहं कृतांजलिः।।

प्रजापतेः कश्पाय सोमाय वरुणाय च।

योगेश्वरेभ्यश्च सदा नमस्यामि कृताञ्जलिः।।

नमो गणेभ्यः सप्तभ्यस्तथा लोकेषु

सप्तसु।

स्वयम्भुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योगचक्षुषे।।

सोमाधारान् पितृगणान् योगमूर्तिधरांस्तथा।

नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम्।।

अग्निरूपांस्तथैवान्यान् नमस्यामि पितृनहम।

अग्नीषोममयं विश्वं यत एतदशेषतः।।

ये तु तेजसि ये चौते सोमसूर्याग्निमूर्तयः।

जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः।।

तेभ्योखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतामनसः।

नमो नमो नमस्तेस्तु प्रसीदन्तु स्वधाभुज।।

**पितृ स्तोत्र अर्थ–**

रूचि बोले – जो सबके द्वारा पूजित, अमूर्त, अत्यन्त तेजस्वी, ध्यानी तथा दिव्यदृष्टि सम्पन्न हैं, उन पितरों को मैं सदा नमस्कार करता हूँ।

जो इन्द्र आदि देवताओं, दक्ष, मारीच, सप्तर्षियों तथा दूसरों के भी नेता हैं, कामना की पूर्ति करने वाले उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूँ।

जो मनु आदि राजर्षियों, मुनिश्वरों तथा सूर्य और चन्द्रमा के भी नायक हैं, उन समस्त पितरों को मैं जल और समुद्र में भी नमस्कार करता हूँ।

नक्षत्रों, ग्रहों, वायु, अग्नि, आकाश और द्युलोक तथा पृथ्वी के भी जो नेता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।

जो देवर्षियों के जन्मदाता, समस्त लोकों द्वारा वन्दित तथा सदा अक्षय फल के दाता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।

प्रजापति, कश्यप, सोम, वरूण तथा योगेश्वरों के रूप में स्थित पितरों को सदा हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।

सातों लोकों में स्थित सात पितृगणों को नमस्कार है। मैं योगदृष्टिसम्पन्न स्वयम्भू ब्रह्माजी को प्रणाम करता हूँ।

चन्द्रमा के आधार पर प्रतिष्ठित तथा योगमूर्तिधारी पितृगणों को मैं प्रणाम करता हूँ। साथ ही सम्पूर्ण जगत् के पिता सोम को नमस्कार करता हूँ।

अग्निस्वरूप अन्य पितरों को मैं प्रणाम करता हूँ, क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत् अग्नि और सोममय है।

जो पितर तेज में स्थित हैं, जो ये चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं तथा जो जगत्स्वरूप एवं ब्रह्मस्वरूप हैं, उन सम्पूर्ण योगी पितरों को मैं एकाग्रचित्त होकर प्रणाम करता हूँ। उन्हें बारम्बार नमस्कार है। वे स्वधाभोजी पितर मुझ पर प्रसन्न हों।

मार्कण्डेयपुराण में महात्मा रूचि द्वारा की गयी पितरों की यह स्तुति 'पितृस्तोत्र' कहलाता है। पितरों की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिये इस स्तोत्र का पाठ किया जाता है।

**कुछ उदाहरण लेते हैं :**

**उदाहरण–1** : पितृ दोष के कारण जातक जन्म से ही सुन–बोल नहीं सकता जिस कारणवश आठवीं कक्षा के बाद कंप्यूटर कोर्स किया। इनका कोई पुत्र भी नहीं है और केवल दो पुत्रियाँ हैं। अपना मकान भी कोशिशों के बाद भी नहीं बन पाया। जातक संयुक्त परिवार में रहता है। बहुत

जन्मदिन 6 अगस्त 1970,
समय : 18.27, स्थान : दिल्ली

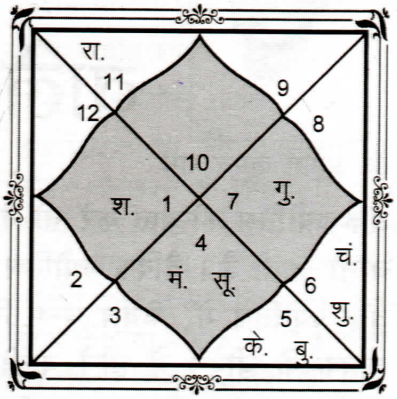


सेवाभावी है। बड़ों का सम्मान करता है इसलिये दोष का असर कम है। नौकरी अच्छी है और मेहनती एवं ईमानदार होने से वहां सम्मानित भी है।

**उदाहरण–2** : 19 फरवरी 1970, प्रातः 12:14, लखनऊ

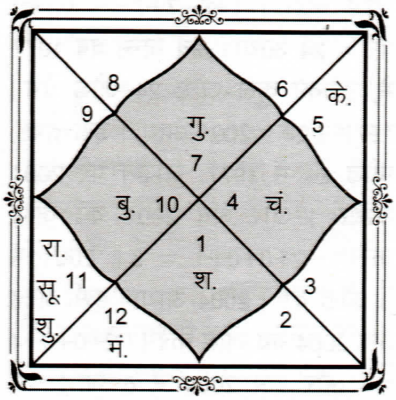


कुंडली में गुरु केंद्र में स्थित है और सूर्य–राहु–शुक्र पंचम भाव में है अतः जातक पूर्ण रूप से पितृदोष से पीड़ित है जिस कारणवश विवाह टूटना व कैंसर जैसी बीमारियों से जूझ चुका है।

पता :
रामजी भवन, पंजाबी कॉलोनी
लखीमपुर खीरी (उत्तर प्रदेश)
मो. 9670088800